इण्डियन
थिऑसफिस्ट

सितम्बर 2023 | खण्ड 121 | अंक 9

विषयवस्तु

आगे का एक कदम — 5–6
प्रदीप एच गोहिल

अग्नि और संतुलन का पदार्थ — 7–11
टिम बॉयड

'ओं मणि पद्मे हुम्' — 12–20
विभा सक्सेना

समाचार और टिप्पणियां — 21–34

सम्पादक — प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक — श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म–विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच गोहिल

आगे का एक कदम

नम्रता एक मानवीय गुणधर्म है, जिसमें कोई अपने खुद को अन्य लोगों या परिस्थितियों की अपेक्षा अधिक महत्वहीन प्रतीत करता है। एक आध्यात्मिक आयाम से, नम्रता का अर्थ है दिव्य को अपने स्वार्थपूर्ण रुचियों से आगे मानना। अपने को दूसरों की अपेक्षा छोटा मानने की क्रिया को नम्रता माना जाता है या संसार में अपने बारे में स्पष्ट परिदृश्य और स्थान की समझ होना। इसमें अपनी सीमाओं का जानना और अन्य लोगों की मंशाओं, शक्तियों और परिदृश्य की समझ भी सम्मिलित है। जैसा अन्य लोग समझते हैं, उससे भिन्न नम्रता आत्म–सम्मान की कमी नहीं है। यह अपने को छोटा समझना नहीं है, किन्तु अपने को (दूसरों से) कम समझना है।

एक लघु कथा जिसे 'नम्रता का बचाव' कहते हैं, के लेखक मि0 चेस्टर्टन कहते हैं ''नम्रता सुखभोग की वह कला है जिसमें हम अपने आप को उस बिन्दु तक छोटा करते हैं जो न छोटा है और न बड़ा है, किन्तु ऐसी वस्तु है जिसकी कोई लम्बाई चौड़ाई नहीं होती है, जिसके कारण उसके लिये सारी ब्रह्मांडीय वस्तुयें वास्तव में अमाप्य होती हैं''।

नम्रता एक महत्व पूर्ण गुणधर्म है जिसे व्यक्ति में होना चाहिये। जब वह किसी की ओर देखता है और अपने से पहले दूसरे को देखता है, तो उसमें नम्रता है। दूसरों की अपेक्षा अपनें को अधिक महत्वहीन प्रतीत करना संकेत करता है कि वह ध्यान देने वाला या समझदार है, स्वार्थी और अभिमानी नहीं है। नम्रता होने से वह संसार को दिखा देता है कि उसकी मन की स्थिति कितनी विनयपूर्ण होगी। नम्रता की शक्ति को अक्खड़पन के वर्तमान युग नें ढक रखा है। नम्रता के लिये बहुत अधिक आत्म ज्ञान, आत्म नियंत्रण और आत्म सम्मान की आवश्यकता है।

नम्रता बिना प्रजाति, धर्म, लिंग, जाति और रंग के भेद के, मानवता के विश्वबन्धुत्व के अभ्यास में सहायक है। यह मानवता में अंतर्निहित शक्तियों के वास्तवीकरण मे भी सहायक है। एक बच्चा नम्रता का एक उत्कर्ष उदाहरण है क्योंकि वह अपने को अन्य लोगों से अधिक महत्वपूर्ण नहीं प्रतीत कर सकता है।

नम्रता हमें जीवन के संघर्ष और बाधाओं के निवारण में भी सहायता करती है, जिसके माध्यम से हमारे व्यक्तिगत और व्यवसायिक जीवन में

समरसता लाती है। इसी प्रकार अक्खड़पन लोगों में विकर्षण उत्पन्न करता है, जहां नम्रता उनमें निकटता लाती है। नम्र होने से तुम्हारे आस के लोगों का भी शक्तिवर्धन होता है। जब लोगों को उनके महत्वपूर्ण होने की प्रतीति कराई जाती है, वे समर्थ हो जाते हैं। वे अपनी शक्तियों की पहचान करने में सक्षम हो जाते हैं और जीवन में अपेक्षाकृत अधिक अच्छे बनने के लिये, उसे निश्चितता से अंगीकार करते हैं। जे. कृष्णमूर्ति अपनी पुस्तक 'फ्रीडम फ्रॉम नोन' (पेपरबैक एडीशन अध्याय 2, पृ0 24) में कहा है कि अपने को समझने के लिये नम्रता की आवश्यकता होती है;

''यदि तुम यह कहते हुये प्रारम्भ करते हो कि, 'मैं अपने को जानता हूं' तो तुमनें अपने बारे में जानना बन्द कर दिया है, या कहते हो, 'मेरे बारे में जानने के लिये अधिक कुछ नहीं है क्योंकि मैं तो मात्र एक स्मृतियों, विचारों, अनुभवों और परम्पराओं का गट्ठर हूं' तब भी तुमनें अपने बारे में जानना रोक दिया है। जब तुम कुछ प्राप्त कर लेते हो तो तुम उस सरलता और नम्रता को त्याग देते हो; जिस क्षण तुम निर्णय पर पहुंच गये या ज्ञान के माध्यम से जांच करना प्रारम्भ कर देते हो, तब तुम समाप्त हो गये, तब तुम प्रत्येक वस्तु का अनुवाद पुराने शब्दों से करने लगते हो। जब तुम्हारा कोई पूर्व–आधार नहीं है, कोई निश्चितता नहीं है, कोई उपलब्धि नहीं है, तब देखने की, प्राप्त करने की स्वतंत्रता है। और जब तुम स्वतंत्रता की खोज करते हो, तब यह हमेशा नया होता है। एक आत्म निश्चित व्यक्ति मृत होता है।''

अपने और दूसरों के बारे में ईमानदार होना नम्रता है। यदि कोई अपने पीछे के कार्यों और स्वभावों को देखनें में ईमानदारी प्रदर्शित करता है तो यह उसकी आध्यात्मिक यात्रा में प्रगति के लिये बहुत महत्वपूर्ण अवसर है। नम्रता अपनी त्रुटियों को मानने और उन्हें अपनी समझने की मांग करती है। ऐसा करना हमारी आध्यात्मिक यात्रा में एक आगे का कदम होगा।

———————————————

टिम बॉयड

अग्नि और संतुलन का पदार्थ

महात्मा पत्रों में तत्वों के बारे में बताते हुये, यह कहा गया है कि केवल एक ही तत्व है, आत्मा/पदार्थ, जो अपने आपके चार या पांच विभेद करता है। इन तत्वों को ईश्वर के वस्त्र कहा जाता है। ''तब, यह तत्व है ..... एक उप तल है, या दृश्य विश्व में अभिव्यक्ति का स्थाई कारण है। ..... प्राचीन विद्वानों नें पांच पहचान–गम्य तत्व आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी ..... किन्तु ये पांच तत्व एक तत्व के विभेदीकृत आयाम हैं।'' (थिऑसफी.वीकी/एन/एलीमेंट्स)। इसलिये तत्वों के बारे में हमारी समझ और अनुभव हमारी दिव्यता पर निर्भर करती है।

अधिकांश आध्यात्मिक परम्परायें एलीमेंट्स को चार या पांच तत्वों में विभाजित करती हैं। जिस परम्परा से थिऑसफी की शिक्षायें अवतरित हुयीं हैं उसमें ये तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश या ईथर हैं। ये तत्व पूरे विश्व में समाये हुये हैं। वह प्रत्येक वस्तु जिससे हम सम्बन्धित होते हैं, और हमारा भौतिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य हमारे अंदर इनके पूर्ण संतुलन पर निर्भर करता है। हम सबके लिये सबसे अधिक कठिन वस्तु इन सब के संतुलन का प्रकरण है। सेंट आगस्टीन नें समीक्षा की थी कि अधिकांश लोगों के लिये पूर्ण परहेज पूर्ण संतुलन की अपेक्षा आसान है।

कुछ वर्षों पहले मुझे एक बीमारी हुयी और मुझे मालूम नहीं था कि वह कौन सी बीमारी थी। जिन डॉक्टरों को यूएस में दिखाया वे कारण नहीं समझ पाये। सामान्य विधियों जैसे उचित भोजन या कसरतों से कोई प्रभाव होता नहीं दिख रहा था। जब मैं सिंगापुर में था तो मैं एक पारम्परिक चीनी चिकित्सक के पास गया। उसकी जांच करने की विधि पश्चिमी चिकित्सकों से भिन्न थी। कोई स्टेथोस्कोप, थर्मामीटर और खूंन की जांच नहीं थी। पूरी चिकित्सा 'नाड़ी' पर आधारित थी। नाड़ी देखने के बाद उन्होंनें हमारे शरीर के कुछ भागों को टटोला और यह निष्कर्ष निकाला कि मेरे शरीर का बैलेंस बिगड़ा हुआ था। उन्होंनें बताया कि मेरे शरीर में सर्दी का प्रकोप बढ़ गया था इसलिये हमें सर्द वस्तुओं से दूर रहना पड़ेगा। हमें मीठे फल, ठंढे किये हुये भोजन, पत्ती वाली सब्जियां आदि खाने से रोक दिया। उन्होंने हमें कुछ जड़ी बूटियों का मिश्रण दिया जिन्हें हमें उबाल कर प्रतिदिन लेने के लिये कहा। मुझे इस प्रक्रिया या उनके जांच करने की विधि के बारे में अधिक नहीं मालूम है, किन्तु बहुत शीघ्र मैं अपनी बीमारी से

बाहर आ गया।

विभिन्न तत्वों के गुण धर्म क्या हैं? पृथ्वी – ठोसपन, स्थायित्व, केन्द्रीयकरण – यह शरीर और विशेष तौर पर हड्डियों, मांसपेशियों भौतिक ढांचे से सम्बन्धित है। जल जिसमें बहाव, आसानी, गति आदि की प्रकृति है, शरीर के तरल पदार्थों से सम्बन्धित है, वह रक्त, तंत्रिका तरल (लिम्फ फ्ल्यूड), और शरीर के अन्य तरल पदार्थों के विकारों से सम्बन्धित है। अग्नि – रचनात्मक, भावनात्मक और परिवर्तनकारी है। हमारा पाचन तंत्र अग्नि से नियंत्रित है। तब वायु है – जो तर्कबुद्धि, गति आदि से सम्बन्धित है। अंत में आकाश है जिसकी कोई सीमा नहीं है जो प्रत्येक वस्तु के अन्दर और उसके आस पास है। और खुलेपन और विस्तार की ओर संकेत करती है।

इस परम्परा में भी प्रत्येक तत्व रंगों से सम्बन्धित हैं। तिब्बतीय बौद्ध धर्म में ध्यान के विभिन्न आयाम हैं जो तत्वों से सम्बन्धित हैं। वे पीले से पृथ्वी को सम्बन्धित करते हैं, जल को श्वेत से, अग्नि को लाल से, वायु को हरे रंग से, और आकाश को नीले से। आध्यात्मिक जीवन और उसकी आवश्यकताओं के दृष्टिकोण से अग्नि तत्व विशेष ध्यान मांगता है। कोई व्यक्ति जो आध्यात्मिक मार्ग पर चलता या अभ्यास करता है, उसके साथ इसी तत्व से अधिक ऊर्जा के साथ अंतर्क्रिया होती है। यह परिवर्तन का प्रतीक है।

अग्नि पदार्थों के रूपों की अवस्थाओं में परिवर्तन लाती है। अग्नि के गर्म करने के गुण के कारण, इसकी अनुपस्थिति में जल बर्फ में परिवर्तित हो जाता है। और अग्नि की उपस्थिति में बर्फ जल में परिवर्तित हो जाती है। और जब जल अग्नि के सम्पर्क में रहता है तो वाष्प में परिवर्तित हो जाता है। जो आस पास के वातावरण में मिश्रित हो जाता है। कोई ठोस पदार्थ भी अग्नि के संपर्क में आने से राख में परिवर्तित हो जाता है। इतना ही नहीं उसकी गन्ध, धुआं और प्रकाश भी आस पास फैलती है। यह परिवर्तन करती है। सारे संसार की आध्यात्मिक परम्पराओं में आत्म–परिवर्तन का अग्नि पर ही फोकस है। इसमें अग्नि की क्षमता – यह उस प्रत्येक वस्तु को जला देती है जिसे जलाया जा सकता है और अशुद्ध को शुद्ध में परिवर्तित करती है। अल्कीमिया के शब्दों में मूल धातु को सोने में परिवर्तित करती है।

एच.पी.ब्लैवैत्सकी (एच.पी.बी.) की सीक्रेट डाक्ट्रीन में एक प्रश्न उठा है, – एसॉटेरिक शिक्षाओं का अग्नि के बारे में क्या दृष्टिकोण है? यह बताती है, ''अग्नि 'एक ज्वाला' का सबसे अधिक पूर्ण और निर्मल परावर्तित बिम्ब है ..... और उसका प्रतीक है''। एकत्व जिससे सब कुछ विकरित हो रहा है, सदा ही

फोकस पर रहता है। एच.पी.बी. आगे कहती हैं, ''अग्नि ..... जीवन और मृत्यु है। प्रत्येक पदार्थ, दिव्य पदार्थ का प्रारम्भ और अन्त है।'' तब वे यह उदाहरण देती हैं, ''एक 6 पेनी का लैम्प ले लीजिये, इसमें केवल तेल डालते रहिये। और उसके बाद उसकी लौ से अनेकों लैम्प, मोम बत्तियों यहां तक कि सारे ग्लोब को जलाने वाली ज्वाला जलाते रहिये। इससे उस पहले लैंप को कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।''

लोग प्रायः किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करते हैं, जिसका अग्नि की तरह स्वभाव है। क्रोध वह अग्नि है जो नीचे के स्तर पर जलाती है। यह अपने को शक्तिशाली किन्तु हानिकारक रूप में प्रकट करती है। इसकी प्रोत्साहित करने की शक्ति के कारण लोग यह सोच लेते हैं कि क्रोध धनात्मक परिणाम लाता है। ऐसा कहा गया है कि, ''जब क्रोधित हो तब बोलो और तुम सबसे अच्छा वक्तव्य दे सकते हो जिसे याद करके तुम सदा पछताओगे।'' यद्यपि क्रोध की अग्नि हमें गतिमान करती है, यह हमारी निर्णयात्मक शक्ति को धुंधला कर देती है।

अधिकांश लोग ऐसे लोगों को जानते होंगे जिनके पास अनियंत्रित स्वभाव का गुण है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूं जो कहते हैं, ''मुझे अपने क्रोध का अधिकार है।'' वास्तव में क्रोध का अधिकार है किन्तु तुम्हें उसके परिणामों के लिये भी दायित्व लेना पड़ेगा। यह वह वस्तु है जो सम्बन्धों में जलती है। क्रोध की गर्मी लोगों को दूर भगा देती है और प्रतिक्रिया में अन्य लोगों में क्रोध उत्पन्न करती है। जीवविज्ञान के स्तर पर यह अन्दर जलाता है, अंगों और नाड़ियों में।

जब हम उस आग की दृष्टि से विचार करें जो व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग की ओर ले जाती है, अल्कीमिया व्यवसाय के रूपक में कामनायें ईंधन हैं। ऐसा कहा जाता है कि ''कामनाओं के पीछे संकल्प खड़ा रहता है''। संकल्प की अग्नि निम्न कोटि की कामनाओं को ''अभिलाषा'' में परिवर्तित कर देती है। हमारी अपनी चेतना वह हांडी है जो कामनाओं के ईधन से जलने वाली आग से गर्म होती है और शुभाकांक्षा पकती है। यही शुभाकांक्षा हमें सनातन ज्ञान की ओर ले जाती है।

मै ऐसे अनेक लोगों को जानता हूं जिन्होंनें अनगिनत भिन्न भिन्न धार्मिक परम्परायें, आध्यात्मिक रास्ते, संबंध और जीविकायें अपनायीं हैं, इसके पहले कि वे उस बिन्दु पर पहुंचें कि वे उस कार्य की पहचान कर सकें जिसे उसे उस आग को जलाने के लिये करना है जो उस मल को जलायेगी जो उसके पार 'एक ज्वाला' तक जाने से रोक रहा है। इस प्रक्रिया में हमारा रोल सहयोग से कार्य करना है, जागरूक होने के लिये जो कुछ करना पड़े वह करें, पहले यह कि

हमारे अंदर कुछ जल रहा है, कि एक शक्ति है और तब उसके निकट जायें।

मैं वह समय याद कर सकता हूं जब मैनें पहली बार थिऑसाफी के अस्तित्व के बारे में जाना। तभी मैं अपने अंतर में कुछ जागरूक हुआ था। यद्यपि मुझे कोई ज्ञान नहीं था, न उसे अभिव्यक्त करने के लिये भाषा थी, किन्तु अग्नि की उपस्थिति और उसके प्रकाश नें मुझे वह दिखाया जिसने मेरे अंतर में पहले से विद्यमान वस्तु को अधिक स्पष्ट कर दिया। हमारी जागरूकता की शक्ति जो साथ साथ जागृत हुयी, उसनें स्पष्ट किया कि वास्तविकता के अतिरिक्त सभी कुछ जलाना है। मेरे मन और रुचि में चिनगारी उठी। मेरी समस्या यह थी कि मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं था। मेरे पास कोई पृष्ठभूमि नहीं थी कि मैं इस प्रज्ञा के शरीर के बाहरी वस्त्रों का भी वर्णन कर सकता। उस बिन्दु पर मुझे प्रतीत हुआ कि इसका रास्ता अध्ययन है। मुझे अधिक जानने की आवश्यकता थी, कम से कम इस प्रज्ञा परम्परा के कुछ आयामों को तो जानें।

उस समय मैं न्यू यार्क सिटी में था और मैं थिऑसफिकल सोसाइटी के पुस्तक भंडार में गया। मुझे कुछ नहीं मालूम था कि मैं आलमारियों से क्या उठाऊं। मैनें शीर्षकों को देखा और विभिन्न पुस्तकों को उठा कर देखा। एक पुस्तक जो मेरी ओर उछली वह थी ऐनी बेसैंट की 'थाट पावर'। एक और पुस्तक जिस पर मेरा ध्यान गया, वह थी अर्नेस्ट वुड की 'कन्संट्रेशन'।

एक वरिष्ठ महिला थीं जो पुस्तक भंडार का रख रखाव कर रही थीं। मैने उनसे कहा कि मैं इस सब के लिये नया था और मैनें उनसे मुझे सलाह देने की प्रार्थना की। मैनें उनको वे पुस्तकें दिखाईं जो मैने चुनी थीं। और उन्होंने कहा कि वे अच्छी हैं। एक और पुस्तक जिसकी ओर मेरा झुकाव था वह थी, ''ऐन एब्रिजमेंट ऑफ एचपीबीज़ सीक्रेट डाक्ट्रीन''। उस समय गोपनीय रहस्यों के बारे में कुछ भी हमारे मन को आकर्षित करता था। उन्होंनें इस पुस्तक को मेरे हाथ से ले लिया और उसे रैक में रख दिया और कहा, ''नहीं! मैं समझती हूं कि यह पुस्तक अभी तुम्हारे लिये नहीं है''। फिर भी उस पुस्तक को मैने खरीद लिया। बाद में जब मैने उसे पढ़ने का प्रयास किया तो, यह हमारे मन के लिये किसी अर्थ की नहीं थी। वे ठीक कहती थीं।

दो वर्ष बाद मुझे मालूम हुआ कि वह महिला डोरा कुंज थीं, थिऑसफिकल सोसाइटी की आजीवन सदस्य, लेखक और विश्वविख्यात अतीन्द्रिय दृष्टा, जो उन लेखकों, जिनकी पुस्तकें मैं खरीद रहा था, को जानती थीं और उनके साथ पढ़ी थीं। उन्होंनें स्पिरिचुअल हीलिंग (थिराप्युटिक टच) की विधियों को विकसित किया था और उनकी स्थापना की थी। उन्होंनें ही मुझे

सलाह दी थी कि जो आग उस क्षण मेरे अंतर में जल रही थी उसके लिये कुछ विशेष ईंधन अन्य की अपेक्षा अच्छे रहेंगे।

एक ऐसे व्यक्ति के बारे में कहानी है जो नियमित रूप से मंदिर जाता था। किन्तु किन्हीं कारणों से उसने जाना बंद कर दिया। एक दिन उनके गुरु ने निर्णय लिया कि वह उसके घर जायेगा। एक व्यक्ति ने दरवाजा खोला और गुरु को अन्दर आने और बैठने को कहा। बाहर बहुत ठंढ थी इसलिये आग के पास बिना कुछ कहे बैठ गये। कुछ देर बाद गुरु ने चिमटा लिया और आग से एक अंगारा निकाला और आग के बाहर एक पत्थर के चूल्हे पर रख दिया। अंगारा तेज चमक रहा था। वे बिना कुछ कहे साथ साथ बैठे रहे। कुछ समय बाद वे जाने के लिये खड़े हो गये, किन्तु वह अंगारा जो निकाला था वह पहले ही काला पड़ गया था। गुरु नें उस अंगारे को फिर से आग में डाल दिया। उस व्यक्ति ने देखा कि जो अंगारा काला हो गया था वह फिर से लाल हो गया। जब गुरु बाहर जा रहा था उस व्यक्ति ने कहा, ''पहले तो मै आपसे इसी सप्ताह फिर से मंदिर में मिलूंगा। और आपने जो मुझे आग का पाठ सिखाया है उसके लिये धन्यवाद देता हूं''।

इस कहानी का विचार है कि जैसे ही हम अंदर की आग और उसकी शक्ति और हम में उसकी आवश्यकता के बारे में जागरूक हो जायें, यह हमारा दायित्व है कि हृदय में उस ज्वाला को आगे जलाते रहें। एक विधि यह है कि हम अपने आप को उसके समक्ष प्रस्तुत कर दें जिसकी उपस्थिति में ज्वाला को जीवन देंगे। अनेकों के लिये कम से कम एक समय के लिये इसको दूसरों के समक्ष शक्तिशाली बनाया जाता है जो अपने को प्रज्ञा की खोज में निष्ठापूर्वक लगे हुये हैं। कोई भी क्रिया जो हमें उस ज्वाला के निकट ले जाती है, हमें ज्वाला के निकट पहुंचाती है।

उन सभी कालों में जब हम धीमें जल रहे हों हमें अपने को ज्वाला को समर्पित करने के लिये अपने आधीन सभी साधनों को आकर्षित करना चाहिये – दूसरों का साथ, अपने को अन्य आध्यात्मिक मित्रों के समक्ष रखना, ऐसे महान लोगों के विचारों को पढ़ना जो हमसे पहले आये हैं, नीरवता ताकि हम अपने शांति के समय में अनुभव कर सकें, प्राकृतिक संसार से पुनः जुड़ना। हम स्वयं अपने को प्रज्वलित करनें के लिये उत्तरदायी हैं। यह हमारे हाथ में है।

————————————————

विभा सक्सेना

ओं मणि पद्मे हुम

भूमिका

सामान्य रूप से मनुष्य अपना मूल्य अपनी पहचान से व्युत्पन्न करता है। किन्तु व्यक्तिगत पहचान वास्तविक मनुष्य नहीं होता है। यह प्राचीन काल से संसार के सभी धर्मों, दर्शनों और संस्कृतियों में जाना जाता था। उपनिषदों के चार महावाक्य इस वास्तविकता के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। (1) प्रज्ञानम् ब्रह्म (चेतना ही ब्रह्म है।) (2) अहम् ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूं।) (3) तत् त्वम् असि (वही तुम हो।) (4) अयम् आत्मा ब्रह्म (यह आत्मा ब्रह्म है।) यही विचार बाइबिल में भी दिया गया ''आई ऐम दैट आई ऐम''। इसका अर्थ यह है कि यह व्यक्तिगत 'मैं हूं' ही सार्वभौमिक 'मैं हूं' है। और इस कथन में भी कि ''आई ऐम इन दी, दाउ आर्ट इन मी'' अर्थात मैं तुम में हूं और तू मुझ में।

इसी प्रकार प्राचीन गूढ़ कहावत ''नो दाईसेल्फ'' जिसे ओरैकिल ऑफ डेल्फी, मनुष्य से विनय करता है कि वह अपनी वास्तविक प्रकृति को जानें। व्यक्तिगत आत्मा से परे, उसके आस्ट्रल, साइकिक, और आध्यात्मिक आत्मा, मनुष्य को वह बनाती है जो वह वास्तविकता में है। यह कुल–परम्परा कि हम क्या हैं, इस आह्वान, ''ओं मणि पद्मे हुम'' में समाया है।

आह्वान का महत्व

इस मंत्र के स्रोत के बारे में मैडम ब्लैवैत्सकी ने कहा है कि आर्य अडेप्ट 'ओं' का जप करते थे। आगे, तूरानियन अडेप्ट 'ओं मणि' का जप करते थे, कुछ देर ठहर कर उसमें 'पद्मे हुम' जोड़ते थे।[1]

प्रत्येक मंत्र के प्रारम्भ में ओं का उच्चारण किया जाता है। इसकी दोहरी प्रकृति है, एक लौकिक और दूसरी शाश्वत। लौकिक दृष्टिकोण से 'ओं' शब्द है, मौलिक ध्वनि, रचना का बीज, एक बीजमंत्र। सार रूप में यह तीन खण्डों में है – अ–उ–म, जो चेतना की तीनों अवस्थाओं – जागृति, स्वप्न और सुषुप्ति, में पूरी रचना का प्रतिनिधित्व करता है। अपने भावनातीत या शाश्वत दृष्टिकोण से 'ओं' शब्दातीत है, ध्वनि से परे, 'ओं' का नीरव आयाम। यह अमिट, अमाप्य और

श्रवणातीत है। सरल रूप में यह विशुद्ध अस्तित्व है, जिसे सच्चिदानन्द या सत् चित् आनन्द कहते हैं, नितान्त एक या परब्रह्म। इस प्रकार मैडम ब्लैवैत्सकी नें 'ओं' के सम्बन्ध में कहा है, ''... सदैव आवरित मौलिक तिहरा भेदभाव, एक अब्सोल्यूट से नहीं, आब्सोल्यूट स्वयं।''[2]

'मणि' शब्द का अर्थ है, अपने ही प्रकाश से चमकने वाला मूल्यवान रत्न। यह आध्यात्मिक व्यक्ति या ईश्वर का प्रतीक है। पद्म या कमल पूरे अस्तित्व के रूप में ब्रह्मांड का प्रतीक है। 'ओं पद्मे हुम' का सरल अर्थ है, 'हे, कमल के आभूषण' किन्तु गूढ़ अर्थ में इसका महत्व है, 'हे! मेरे अंतर के ईश्वर'।[3] यह सत्य है कि प्रत्येक मानव में ईश्वर है, 'कमल पर रत्न', चाहे हम उसे **पद्मपाणि, कृष्ण, बुद्ध,** या **क्राइस्ट** कहें।[4] यह हमारी आध्यात्मिक आत्मा है। मनुष्य ईश्वर था और फिर से होगा। आन्तरिक दृष्टिकोण से यह आह्वान मनुष्य और विश्व के बीच अमिट एकत्व की ओर संकेत करता है, मनुष्य विश्व, जो मैक्रोकाज्म है, का माइक्रोकाज्म है।

मनुष्य और विश्व के बीच सम्बन्ध

मैडम ब्लैवैत्सकी के अनुसार एसॉटेरिक विज्ञान का दोहरे उद्देश्य से अध्ययन से माइक्रोकाज्म और मैक्रोकाज्म के बीच निसंदेह सामंजस्य स्थापित हो जाता है। उद्देश्य (1) मनुष्य को उसके आध्यात्मिक और भौतिक सार के रूप में दोनों एक तत्व और प्रकृति के ईश्वर से समत्व का स्थान देना, और (2) मनुष्य में उन्हीं संभावित शक्तियों को प्रदर्शित करना, जो प्रकृति की रचनात्मक शक्तियों में हैं।

वे निश्चित रूप से मानती हैं कि रंग, ध्वनियों और संख्याओं के गुणों और उनके कार्यों के सामंजस्य के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके ये उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं।[5]

मनुष्य के आध्यात्मिक और भौतिक सारों के एक तत्व परब्रह्म से समत्व इस सत्य से सिद्ध होता है कि जो त्रिआयमी भेद (अउम) एक तत्व (परब्रह्म) में निहित हैं, वे मैक्रोकाज्म और माइक्रोकाज्म दोनों में ही परावर्तित होते हैं।[6] यह सत्य पर मैडम ब्लैवैत्सकी की सीक्रेट डाक्ट्रीन के कास्मोगॉनी में विस्तार से विवेचन हुआ है। मनुष्य और विश्व के एक ही स्रोत के कारण ही मनुष्य का अंतरतम आध्यात्मिक सार तत्व विश्व के आध्यात्मिक सार तत्व के समत्व में है।

यही मनुष्य और विश्व के बीच संबन्ध है। जब विभिन्न लोकों के पदार्थीय शरीरों की बेड़ियों से मुक्त होता है, तब मनुष्य का आध्यात्मिक सार तत्व विश्वात्मा में विलीन हो कर उससे एक हो जाता है।

वृत्त का वर्गाकार होना

एचपीबी कहती हैं, कि परब्रह्म के त्रिआयामी भेद हैं (1) दिव्य विचार, (2) शब्द, और (3) आकाश। यह उच्च त्रिगुण सात पर्तों वाले मैक्रोकाज्म और माइक्रोकाज्म दोनों में परावर्तित होता है। इसका सम्बन्ध विश्व और मनुष्य के तीन उच्च गुणों से है। वे हैं (1) परम आत्मा, (2) विश्वात्मा या महाबुद्धि (3) ब्रह्मांडीय मेधा या महत। मनुष्य में ये (1) आत्मा, (2) बुद्धि और (3) मनस हैं।

परमात्मा और महाबुद्धि महत के कारण विश्वात्मा हो गया और जो उनमें 'मैं हूं' का भाव प्रदान करता है। इसी प्रकार आत्मा और बुद्धि मनस के कारण एक अलग इकाई बन जाते हैं और उसमें 'मैं हूं' का भाव देते हैं। इन तीन आयामों का एक अस्तित्व के रूप में प्राकट्य पवित्र चतुश्क कहलाता है। चतुर्भुज में चार तत्व होते हैं, इन तीनों का एक स्रोत चौथा तत्व है। यह वृत्त का चतुर्भुज में रहस्यमय परिवर्तन है। ब्रह्म के उच्च तीन तत्व, विश्वात्मा दिव्य चतुर्भुज है, उसी प्रकार प्रत्येक अलग मनुष्य एक निम्न चतुर्भुज है। इस प्रकार प्रत्येक अलग मनुष्य आध्यात्मिक चतुर्भुज है।

विश्वात्मा और आत्मा के बीच की कड़ी

मेधा विश्वात्मा और मानवीय आत्मा के बीच की कड़ी है, क्योंकि मनुष्य में मनस की व्युत्पत्ति महत या ब्रह्मांडीय मेधा से हुई है।[7]

महत को तीसरा वैश्विक लॉगॉस माना गया है। महाबुद्धि और विश्वात्मा क्रमशः दूसरे और पहले वैश्विक लॉगॉस हैं। (चार कुमार ब्रह्मा के पुत्र हैं इसलिये इन्हें मानसपुत्र भी कहते हैं।) कुमार मनुष्य के व्यक्तित्व को मानसिक शक्ति प्रदान करने के लिये मनुष्य व्यक्तित्वों में अवतरित होते हैं।

माइक्रोकाज्म का मैक्रोकाज्म से सामंजस्य स्थापित करना

रहस्यमय वाक्य 'ओं मणि पद्मे हुम' का व्यावहाहरिक प्रयोग भी है। विभिन्न ढंगों से प्रयोग कर के, इसमें क्रिया और विचार के सात स्तरों को प्रभावित करने की क्षमता है।[8] थिऑसफी हमें बताती है कि मनुष्य की चेतना के

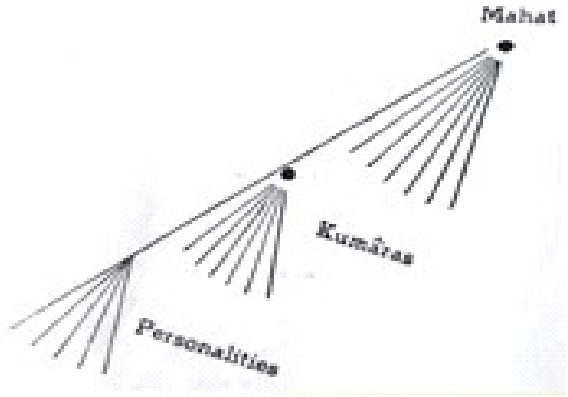

7 स्तर हैं जो अस्तित्व के सात लोकों से सम्बन्धित हैं। मैडम ब्लैवैत्सकी का कथन है, ''यह मनुष्य में रहती है ताकि यह उसकी आन्तरिक तीन स्थितियों का कास्मॉस के तीन उच्चतर भुवनों से सामंजस्य बना सके।''[9] किन्तु ऐसा इस रहस्यमय वाक्य को सात विधियों से प्रयोग करने से ही होता है। यह विधि निश्चित ही इस वाक्य को विशेष लय और स्वर में उच्चारित करनें, जो रंगों और संख्याओं से सम्बन्धित हैं, को सम्मिलित करती है। उन्होंनें आगे कहा है, ''किन्तु इस सामंजस्य को स्थापित करने के पहले अपनी क्रियाओं और विचारों के लोकों में जागृत होना होगा''।

वाक्यांश ''अपनी तीन उच्चतर स्थितियों की ब्रह्मांड के तीन लोकों से समस्वरता स्थापित करना'' का अर्थ बहुत सरल है। इसका अर्थ है वैश्विक चेतना विकसित करना या अपनी चेतना को ब्रह्म की चेतना में विलीन कर देना। यह स्तर प्राप्त करना पूरी तरह से मनुष्य के अपने स्वयं के प्रयास पर निर्भर करता है। किन्तु इसके पहले जीवन और क्रियाओं की तीन स्थितियों में जागरूक होना होगा।

तीन स्थितियां मनुष्य चेतना के तीन उच्चतर के स्तर हैं जो उसके तीन तत्वों – 'आत्म–बुद्धि–मनस' से सम्बन्धित हैं। विकास की वर्तमान स्थिति में मनुष्य का जीवन और क्रियायें ऐसे मनस से निर्देशित होती हैं जिसका निर्देशन कामनायें करती हैं। उसकी चेतना अपनी पहचान अपने व्यक्त्वि या निम्न चतुर्भुज से करती है। इस प्रकार का जीवन जीते हुये, वह विश्व के उच्चतर

आयामों से सामंजस्य नहीं स्थापित कर सकता है। उसे वैश्विक चेतना प्राप्त करने के प्रयास के पहले, आत्म चेतन होना होगा। या यों कहें कि उसका जीवन और गतिविधियां उसके तीन उच्च तत्व आत्म–बुद्धि–मनस के पूर्ण प्रभाव में रहते हैं; जहां पूरी तरह से शुद्ध मनस पूर्ण रूप से बुद्धि, आध्यात्मिक आत्मा के सामंजस्य में रहता है। यह पशुवत कामनाओं से पूर्ण मुक्ति प्रदान करता है और कामना और क्लेश से छुटकारा दिलाता है। इसी जीवन में सर्वोच्च प्रकार की पूर्णता और पवित्रता प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार जब वह पदार्थ या भौतिक संसार से मुक्त हो जाता है, तब मनुष्य वैश्विक जीवन ब्रह्म के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है।

इस प्रकार के प्रयास का यह रहस्यमय आह्वान 'ओं मणि पद्मे हुम' एक साधन बन सकता है; कुछ विशेष स्वरों में उच्चारण करने से, कुछ विशेष ध्वनियों से जो कुछ रंगों से संबंध रखती हैं, जो मनुष्य के विशेष अंगों को प्रभावित करते हैं।

स्वर और रंगों का संबंध

भौतिक लोक के स्वर सूक्ष्म लोकों की ध्वनियों को प्रभावित करती हैं, जो प्रकृति की गूढ़ शक्तियों को जागृत करती हैं। भारतीय ग्रन्थ चार प्रकार की ध्वनियों की बात करते हैं – परा, पश्यति, मध्यमा और वैखरी। थिऑसफी हमें आगे बताती है कि प्रत्येक ध्वनि किसी विशेष रंग और संख्या और किसी लोक में एक संवेदना से संबन्धित होती है।[10] यह सहसंवेदना किसी शक्ति की है जो भौतिक, साइकिक या आध्यात्मिक होती है।

ध्वनियों के रंगों के साथ सहसंवेदना का मूल ध्वनियों और प्रकाश के सहसंवेदना में है, जैसे श्वेत प्रकाश सात रंगों से बनता है। प्रकाश की समसंवेदना चेतना से है क्यों कि प्रकाश वह है जिससे कुछ दृष्टिगत होता है। सारे प्रकाश का स्रोत आत्मा है, आत्म प्रकाशित जागरूकता, शाश्वत दिव्य विचार।

दिव्य विचार में विश्व सदैव रहता है। यह ध्वनि के अभिकरण से होता है। ध्वनि दिव्य विचार है जो शब्द बनती है; शाश्वत ओं की प्रतिध्वनि। परिणाम स्वरूप, शाश्वत क्षेत्र आकाश के रूप में, जो ध्वनि द्वारा इस योग्य बनता है। यही प्रकाश या दिव्य विचार का ध्वनि (ओं शब्द) के साथ सहसंवेदना का स्रोत है। ब्रह्मांडीय

तत्व आकाश के बाद अन्य ब्रह्मांडीय तत्व वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी क्रम से बनते हैं, प्रत्येक के अपने स्वयं के गुणधर्म होते हैं और उसके पहले के तत्व के गुण होते हैं। इस प्रकार ध्वनि पदार्थ के सारे भेदों का कारण बनती है, जैसे प्रकाश पूर्ण चेतना की अभिव्यक्ति का कारण है।

चेतना की सात लोकों में अभिव्यक्ति का स्तर लोक विशेष के पदार्थ के घनेपन पर निर्भर करता है। यही पदार्थ और चेतना का सम्बन्ध है जिसका परिणाम प्रकाश और ध्वनि के बीच का सम्बन्ध है। ध्वनि वाणी है, प्रकाश इसका सहसंवेदित अर्थ या विचार है। एक विशेष बारम्बारता जो एक विशेष रंग के रूप में दिखाती है। प्रकाश की विशेष बारम्बारता ध्वनि की विशेष बारम्बारता से संबंध रखती हैं। यही कारण है कि संवेदनशील लोग प्रत्येक रंग को किसी विशेष ध्वनि से संबंधित करते हैं। जिस प्रकार प्रकृति में ध्वनि है जो हम नहीं सुन सकते हैं उसी प्रकार ऐसे रंग हैं जो हम नहीं देख सकते हैं किन्तु उन्हें सुना जा सकता है। अकल्टिज्म में प्रिज्म का प्रत्येक रंग ''ध्वनि का जनक'' कहा जाता है, जो इससे सामंजस्य में है।[11]

इसके अतिरिक्त, गूढ़विद्या में काले और सफेद की रंग के रूप में पहचान नहीं की जाती है। सफेद सारे रंगों की अनुपस्थिति है, इसलिये कोई रंग नहीं है। काला प्रकाश की अनुपस्थिति है, इसलिये सफेद का ऋणात्मक आयाम है। काला और सफेद हमारे देखने के भौतिक उपकरणों के कारण केवल भौतिक जगत में पहचाने जाते हैं। वे व्यक्तिपरक संसारों में अस्तित्व में नहीं हैं। जो रंग हम अपनी भौतिक आंखों से देखते हैं वे अकल्ट प्रकृति के सच्चे रंग नहीं हैं। वे हमारी भौतिक आंखों की कार्य प्रणाली को कुछ स्पंदनों की गति के कारण प्रभावित करते हैं। हमारी आंखों का रेटिना केवल तीन स्पष्ट रंगों के प्रति संवेदनशील है। इसलिये हम उन सात रंगों को नहीं देखते हैं जो वास्तव में अस्तित्व में हैं, बल्कि भौतिक आंखों से केवल उनकी सीमायें देखते हैं।

रंगों और ध्वनियों के सात पदानुक्रम

ध्यान चोहानों के प्रारम्भिक सात पदानुक्रम हमारे प्रक्रम के सात पवित्र ग्रहों के आध्यात्मिक शासक हैं – शनि, बृहस्पति, मंगल, शुक्र, सूर्य और चन्द्रमा। सूर्य और चन्द्रमा उन ग्रहों के स्थान पर हैं जो दृश्य नहीं हैं। प्रिज्म के सात रंग इन्हीं सात पदानुक्रमों के सीधे उत्सर्जन हैं।[12] – बैगनी, नीला, आसमानी, हरा,

पीला, नारंगी और लाल। वे पहली सात किरणें हैं जिन्हें 'प्रकाश के पुत्र' कहते हैं। सब को मिला कर अभिव्यक्त लॉगॉस बनता है। प्रत्येक प्रारम्भिक किरण में भी सात उपकिरणें होती हैं जो प्रिज्म के रंगों के सामंजस्य में हैं। उप किरणों में उस रंग की प्रधानता होती है जो उसकी प्राथमिक किरण का होता है। यह रंग पूरी हाइरार्की की विशेषता होती है।

मैडम ब्लैवैत्सकी का कथन कि प्रत्येक स्तर की मानव चेतना और उसके सात संवेदों में से प्रत्येक सात पवित्र ग्रहों से जुड़ा होता है और उसके प्रभाव में रहता है। इन ग्रहों की सात आध्यात्मिक हाइरार्कीज में से प्रत्येक मनुष्य के सात तत्वों का आभामंडल उसके विशेष रंग के साथ प्रदान करते हैं। इसलिये प्रिज्म के सात रंग जो सात हाइरार्कियों से निकलते हैं वे उन मानवीय तत्वों से सम्बन्धित होते हैं। वे कारणों के स्तर होते हैं जिसके अकल्ट गुण हमारी सारी भावनात्मक, साइकिक, मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं को प्रभावित करते हैं।

इस प्रकार उदाहरण के लिये लिंग शरीर का आभामंडल बैगनी हाइरार्की की बैंगनी उप किरण से प्राप्त किया गया है, और उच्च मनस का आभा मंडल नीली हाइरार्की की नीली उप किरण से और इसी प्रकार अन्य तत्व। हमनें पहले ही देख लिया है कि प्रकाश की विशेष बारम्बारता से ध्वनि की सम्बन्धित बारम्बारता प्रभावित होती है। इसलिये, हमारे सात में से प्रत्येक तत्व से संबंधित ध्वनि में यह योग्यता है कि वह उससे सम्बन्धित तत्व को प्रभावित करे। यह अगले पृष्ठ पर दी गयी तालिका से स्पष्ट हो जाता है।[11]

मनुष्य 'ओं मणि पद्मे हुम' के ज्यामितीय समतुल्य के रूप में

हमारे सिद्धांत सात तार वाले संगीत उपकरण के रूप में है। सनातन ज्ञान के खो जाने के कारण मनुष्य की क्षमतायें वायलिन की ढीले तारों की तरह हो गयी हैं। किन्तु एक गूढ़विद जो जानता है कि उन्हे कैसे तानना और वायलिन को रंगों और ध्वनियों के सामंजस्य में कैसे लाना, वह उससे दिव्य समरसता का अर्क निकाल लेता है।

षटकोणीय सितारा अपने केन्द्र में स्थित सातवें के साथ मैक्रोकाज्म या विश्व का उसके सात शक्ति केन्द्रों के साथ ज्यामितीय रूप से प्रतिनिधित्व करता है और सब का संश्लेषण करता है। मनुष्य या माइक्रोकाज्म का प्रतिनिधित्व

DIAGRAM II

These Correspondences are from the Objectives, Terrestrial Plane.

Ātman is no Number, and corresponds to no visible Planet, for it proceeds from the Spiritual Sun, nor does it bear any relation either to Sound, Colour, or the rest, for it includes them all.

As the Human principles have no Numbers per se, but only correspond to Numbers, Sounds, Colours, etc., they are not enumerated here in the order used for exoteric purposes.

NUMBERS	METALS	PLANETS	THE HUMAN PRINCIPLES	DAYS OF THE WEEK	COLOURS	SOUND Musical Scale	
						Sanskrit Gamut	Italian Gamut
1 AND 10 Physical Man's Keynote	IRON	♂ MARS The Planet of Generation	KĀMA-RŪPA The vehicle of seat of the Animal instincts and passions	TUESDAY *Dies Martis*, or Tiw	1. RED	SA	DO
2 Life Spiritual and Life Physical	GOLD	☉ THE SUN The Giver of Life physically Spiritually and esoterically the substitute for the ester-Mercurial Planet, a sacred and secret planet with the ancients.	PRĀNA, OR JIVA Life	SUNDAY *Dies Solis*, or Sun	2. ORANGE	RI	RE
3 Because BUDDHI is (so to speak) between ĀTMAN and MANAS, and forms with the seventh, or Auric Envelope, the Devâchanic Triad.	MERCURY. Mixes with Sulphur, as BUDDHI is mixed with the Flame of Spirit. (See Alchemical Definitions.)	☿ MERCURY The Messenger and interpreter of Gods	BUDDHI Spiritual Soul, or Ātmic Ray; vehicle of Ātman	WEDNESDAY. *Dies Mercurii*, or Woden. Day of Buddha in the South, and of Woden in the North — Gods of Wisdom.	3. YELLOW	GA	MI
4 The middle principle — between the purely material and purely spiritual triads. The conscious part of animal man.	LEAD	♄ SATURN	KĀMA MANAS The Lower Mind, or Animal Soul	SATURDAY *Dies Saturni*, or Saturn	4. GREEN	MA	FA
5	TIN	♃ JUPITER	AURIC ENVELOPE	THURSDAY *Dies Jovis*, or Thor	5. BLUE	PA	SOL
6	COPPER When alloyed becomes Bronze (the dual principle)	♀ VENUS The Morning and Evening Star	MANAS The Higher Mind, or Human Soul	FRIDAY *Dies Veneris*, or Frigg	6. INDIGO or DARK BLUE	DHA	LA
7 Contains in itself the reflection of Septenary Man.	SILVER	☾ THE MOON The Parent of the Earth	LINGA-ŚARĪRA The Astral Double of Man; the Parent of the Physical Man.	MONDAY *Dies Lunae*, or Moon	7. VIOLET	NI	SI

पंचकोणीय सितारा करता है। एचपीबी नें व्याख्या की है कि इन दो शक्तियों का संयोग और माइक्रोकाज्म तथा मैक्रोकाज्म का सामंजस्य 'ओं मणि पद्मे हुम' के आह्वान का ज्यामितीय समतुल्य प्रदान करता है,[13] उनके अनुसार,

''हमें बताया गया है कि इस परिणाम तक पहुंचने के लिये कि ध्वनि, रंग और संख्याओं से सामंजस्य हो सके पवित्र सूत्र 'ओं मणि पद्मे हुम' को सर्वश्रेष्ठ

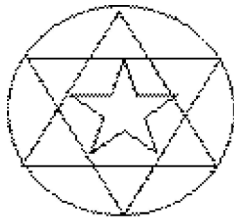

रूप में आंकलित किया गया है। इसलिये हम यह सारांश निकाल सकते हैं कि उचित प्रकार से सात प्रकार की विधियों से उच्चारित करके, मनुष्य के तीन उच्चतर तत्वों को प्रभावित किया जा सकता है, और वैश्विक चेतना के आलिंगन के लिये उन्हें अनावरित किया जा सकता है। इसी लिये एचपीबी कहती हैं कि 'ओं मणि पद्मे हुम' सारे पूर्वी जपों में से सबसे अधिक पवित्र है।

संदर्भ

- एच.पी. ब्लैवैत्सकी, एसॉटेरिक इंस्ट्रक्शन्स, द थिऑसफिकल पब्लिशिंग हाउस, अडयार, चेन्नै, 2015, पृ0 4
- पूर्व संदर्भ, पृ0 13;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 85;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 7, 8;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 10;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 23;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 259, 260;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 6;
- एच.पी. ब्लैवैत्सकी, सीक्रेट डाक्ट्रीन, खण्ड 1 कास्मोजिनेसिस, द थिऑसफिकल पब्लिशिंग हाउस, अडयार, चेन्नै, 2010, पृ0 199
- एच.पी. ब्लैवैत्सकी, एसॉटेरिक इंस्ट्रक्शन्स, द थिऑसफिकल पब्लिशिंग हाउस, अडयार, चेन्नै, 2015, पृ0 36
- पूर्व संदर्भ, पृ0 60;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 40, 41;
- पूर्व संदर्भ, पृ0 95;

संदर्भग्रन्थ सूची

- एच.पी. ब्लैवैत्सकी, एसॉटेरिक इंस्ट्रक्शन्स, द थिऑसफिकल पब्लिशिंग हाउस, अडयार, चेन्नै, 2015
- एच.पी. ब्लैवैत्सकी, सीक्रेट डाक्ट्रीन, खण्ड 1 कास्मोजिनेसिस, द थिऑसफिकल पब्लिशिंग हाउस, अडयार, चेन्नै, 2010
- एच.पी. ब्लैवैत्सकी, सीक्रेट डाक्ट्रीन, खण्ड 5, द थिऑसफिकल पब्लिशिंग हाउस, अडयार, चेन्नै, 1971
- बोरिस डि जिरकॉफ, कलेक्टेड राइटिंग्स, खण्ड 12,
- माण्डूक्य उपनिशद, https://www.swami-krishnananda.org/mand/mand_1.html

समाचार और टिप्पणियां

बंगाल

बंगाल थिऑसफिकल फेडरेशन नें हेमेन्दु बिकाश चौधरी मेमोरियल लेक्चर का आयोजन बीटीएस हाल में बंगाल थिऑसफिकल सोसाइटी के सहयोग से 28 नवम्बर 2022 को किया। श्री रतन दास, एक प्रतिष्ठित लेखक नें 'स्वामी विवेकानन्द – चिर बन्धुर पथे चला एक अग्रपथिक'' पर वक्तव्य प्रस्तुत किया जो स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित था। वक्तव्य बहुत रोचक था और उपस्थित सहभागियों ने उसकी प्रशंसा की।

श्रीमती केस्वर जहां मेमोरियल भाषण बीटीएस हाल में दि0 4 जून 2023 कों संपन्न हुआ जिसकी थीम थी ''विद्यासागर – महिला उद्धारक और थिऑसफिकल सोसाइटी की भूमिका''। श्री प्रन्तोश बन्द्योपाध्याय, समायोजक, विद्यासागर अध्ययन और अनुसंधान केन्द्र, कोलकाता वक्ता थे। उस संस्थान के कुछ प्रोफेसरों और रिसर्च स्कॉलरों नें भी भाग लिया और अपने विचार साझा किये। श्रोताओं ने सामान्य रूप से वक्ता की उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिये प्रशंसा की।

थिऑसफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस, वे0 बंगाल का एक अनूठा प्रयास

टी ओ एस वेस्ट बंगाल नें बीटीएस भवन में 3 जून 2023 को युवा प्रशिक्षणार्थियों को विकसित करने के उद्देश्य से एक 6 महीने का सामान्य जन संचार पर एक 'संभाषण कोर्स' प्रारम्भ किया है, जो प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं के लिये भी तैयार करेगा। इसका आयोजन मात्र रु 200/– प्रवेश शुल्क ले कर निःशुल्क किया जा रहा है।

बहन पौर्नमासी पटनायक, राष्ट्रीय वक्ता का फेडरेशन के कार्यालय/बीटीएस सभागार में 24 जून 2023 को आगमन हुआ और उन्होंनें ''थिऑसफिकल वे ऑफ लाइफ'' पर 24 और 25 जून को अध्ययन सत्र संचालित किया। दि0 25 जून को दिन भर का कार्यक्रम हुआ उन्होंनें भारत समाज पूजा संपन्न करवाने के पश्चात लंच के बाद अध्ययन सत्र संचालित किया। अध्यक्ष बन्धु पंकज कुमार दत्ता ने

एक लघु वक्तव्य दे कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

डा0 बिपुल सर्मा, राष्ट्रीय वक्ता नें 8 और 9 जुलाई को ''द वेज ऑफ सेल्फ नॉलेज'' विषय पर बीटीएस हाल में एक अध्ययन सत्र संचालित किया। सदस्यों नें वक्तव्य का बहुत आनन्द लिया और उनके नये विचारों से लाभान्वित हुये। कार्यक्रम के अंत में बहन मधुश्री चौधरी और उनकी टीम नें अपने सुन्दर डांस ड्रामा की प्रस्तुति की जो भगवान बुद्ध पर आधारित था। सभी नें इसकी बहुत प्रशंसा की।

बाम्बे

आषाढ़ पूर्णिमा समारोह – बाम्बे फेडरेशन नें दि0 3 जुलाई 2023 को ब्लैवैत्सकी लॉज के ग्रीन रूम में आषाढ़ पूर्णिमा समारोह का संचालन किया। भगवान बुद्ध की मूर्ति के समक्ष सभी नें यूनीवर्सल प्रार्थना कहा। बहन अबान अमरोलीवाला नें आषाढ़ पूणिमा पर्व जो हिमालय के दक्षिणी ढलान पर स्थित लॉर्ड मैत्रेय के आवास के समक्ष स्थित बगीचे में होता है उसका वर्णन किया। इसमें तीर्थ यात्रियों द्वारा भौतिक रूप से और आस्ट्रल आगन्तुक सम्मिलित होते हैं।

इसी दिन लॉर्ड बुद्ध नें अपनें प्रथम पांच शिष्यों को 'धम्मचक्र प्रवर्तक सुत्त' जिसका अर्थ है, 'अच्छाई के मार्ग के धर्म रथ के पहियों को गति देना'' की शिक्षा दी थी। लॉर्ड मैत्रेय पेन्टेकोस्टल चमत्कार के साथ इस वक्तव्य को पाली भाषा में 'चार महान सत्य और आष्टांग मार्ग' को दोहराते हैं और इसे प्रत्येक उपस्थित व्यक्ति अपनी अपनी मातृभाषा में सुन लेता है।

बहन अबान नें विस्तार से व्याख्या की– दुख या कष्ट, दुख के कारण, दुखों से निवृत्ति और वह मार्ग जिससे दुखों से छुटकारा मिलता है। उन्होंने कहा कि बुद्धिज्म कोई धर्म नहीं है, यह एक जीने की विधि है जिसमें करुणा, प्रेम, दयालुता, दूसरों की सहायता, निष्कामता, आसक्तिहीनता, कर्तव्य पालन, और कर्म के नियम को समझते हुये शांतिपूर्वक रहना है। यह मध्यम मार्ग है जो दिव्यत्व प्रदान करता है। बन्धु नवीन कुमार के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ बैठक का समापन हुआ। सभी नें अंत में एक प्रार्थना कही, ''गुरु चरणे दीक्षा हिमालय की गोद में''।

ब्लैवैत्सकी लॉज, टीएस, के सदस्य बन्धु जनार्दन शेरीगर नें गुरु पूर्णिमा के दो दिन पहले अपने गुरुजी से गंगा के किनारे दीक्षा ग्रहण की और दिव्य आशीर्वाद के साथ वेदान्त की खोज में सत्यनिष्ठानंद सरस्वती हो गये।

ब्लैवैत्सकी लॉज टीएस टीम यह साझा करते हुये आनन्द की अनुभूति करती है कि बन्धु जनार्दन शेरीगर, जो लॉज के एक क्रियाशील सदस्य थे और एक बार आफिस बेयरर भी रह चुके थे, 2016 में सन्दीपनी साधनालय पवई मुम्बई में वेदान्तिक अध्ययन के पश्चात, चिन्मय मिशन में 'ब्रह्मचारी दामोदर चैतन्य' के रूप में दीक्षित हो चुके थे।

मिशन के तीन केन्द्रों में आवासीय आचार्य के रूप में सेवा करने के बाद, ब्रह्मचारी दामोदर चैतन्य 2022 में हिमालय चले गये थे। तब 1 जुलाई 2023 को ब्रह्मचारी दामोदर चैतन्य की उत्तरकाशी (हिमालय) में पवित्र मां गंगा के घाट पर स्वामी आनन्द सरस्वती (योग विद्या गुरुकुलम उत्तरकाशी के संस्थापक जहां उनका वास भी है) द्वारा 'स्वामी सत्यनिष्ठानंद सरस्वती' के नाम से दीक्षित हुये।

वास्तव में यह उनके जीवन का बहुत तेज विकास था कि बन्धु जनार्दन स्वामी सत्यनिष्ठानंद हो गये। अपने एक प्रिय सदस्य को ईश्वर का ऐसा आशीर्वाद मिलते देख कर धन्य हुये हैं, यह हमें अपने आध्यात्मिक प्रयास में अडिग रहने के लिये प्रेरणादायक होना चाहिये। हम स्वामी सत्यनिष्ठानंद सरस्वती को बधाई देते हैं और अपने प्रयासों में उनके निर्देश लगातार लेते रहेंगे।

पी. पावरी की पुस्तक, 'थिऑसफी एक्सप्लेन्ड इन क्वेश्चन्स ऐण्ड आन्सर्स' का बन्धु खोस्राव पावरी के द्वारा अध्ययन का जारी रखना एक दूरदृष्टि पूर्ण निर्णय था। इस अध्ययन को बन्धु आर्नी नरेन्द्रन नें करोना महामारी के समय जूम सिस्टम से प्रारम्भ किया था। अध्ययन और व्याख्या के अतिरिक्त बन्धु आर्नी अपने अनुभव भी साझा करते थे। अन्य लोगों को भी वे चिन्तन में साथ लेते थे ताकि उनकी आध्यात्मिक खोज साथ साथ चलती रहे। दो वर्ष की महामारी के बाद यह अध्ययन ब्लैवैत्सकी लॉज के ग्रीनरूम में सदस्यों की भौतिक उपस्थिति में होने लगी। बन्धु खोस्राव पावरी अपनी मजबूरियों के कारण अपने आवास से ही जूम बैठकों में नियमित भाग लेते थे। वे भौतिक बैठकों में भाग नहीं ले सकते थे इसलिये वे इस पुस्तक का अध्ययन जारी रखने के लिये इस पुस्तक को प्राप्त

करना चाहते थे। बन्धु आर्नी स्वयं बन्धु खोस्राव के पास गये और उन्हें पुस्तक भेंट की। तीन वर्ष के बाद जब इस पुस्तक का अध्ययन समाप्ति के निकट है, बन्धु खोस्राव इसका अध्ययन जारी रख सकेंगे।

कर्नाटक

फेडरेशन के द्वारा बंगलोर से 'ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' पर प्रत्येक रविवार को ऑन लाइन वक्तव्य अभी भी आयोजित किये जा रहे हैं। अप्रैल में इस अध्ययन में जिन बिन्दुओं पर वार्तायें हुयीं, वे हैं – बन्धु एम. रेडप्पाचार्य नें 'हरैसमेंट' पर, बहन नवर्तनम्मा नें 'आइडिल गॉसिप' पर, बन्धु वरुण नें 'दैनिक जीवन में प्रेम' पर, बहन के.ए. ऊषा प्रकाश नें 'ब्लाइंड बिलीफ' पर और बन्धु एम.एस. प्रदीप नें 'सेवा' पर।

'मार्गन्वेशने' और 'यू' पुस्तकों पर प्रत्येक गुरुवार को ऑन लाइन कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। दि0 6 अप्रैल 23 को बहन डी.जे. प्रेमलीला नें 'द थ्री इन्ट्यूटिव सर्चेस' पर बोला। बहन ज्योति नागेश ने 13 अप्रैल को 'द मिडिल पाथ' पर एक वार्ता की। डा0 आर.वी. वस्ट्राड नें दि0 20 अप्रैल को 'ऐन इन्ट्रोडक्शन टू द बुक यू' विषय पर वक्तव्य दिया। दि0 27 अप्रैल को डा0 आदिकेशव प्रकाश नें 'एक व्यक्तिगत तुम, तुम्हारी मां, तुम्हारे पिता और तुम्हारा परिवार और तुम्हारी शिक्षा'' विषय पर चर्चा की।

प्रत्येक रविवार को सायं 7.00 पीएम पर 'सेल्फ कल्चर' पुस्तक पर ऑन लाइन वार्तायें हुईं। मई 2023 में जिन विषयों पर चर्चायें हुईं वे हैं – डा0 आर.वी. वस्ट्राड नें दि0 7 मई को 'इंट्रोडक्शन टू द बुक सेल्फ कल्चर' पर, बहन डा0 ज्योति नागेश नें दि0 14 मई को 'अकल्टिज्म की दृष्टि में विकास का सिद्धांत' और बहन डी.जे. प्रेमलीला नें दि0 21 मई को 'मनुष्य की संरचना' विषय पर चर्चा की।

मई 2023 में प्रत्येक गुरुवार की बैठकों में जो वार्तायें हुईं वे हैं – बन्धु आदिकेशव प्रकाश नें पुस्तक 'यू' से 'वैश्विक परिवार और परिस्थितियां' पर, बहन शशिकला नें 'आपका व्यवसाय' और 'लीजर वार ऐण्ड पीस ऐण्ड योर यूनीवर्स' पर, बन्धु वेंकटचलपति नें 'यू ऐण्ड योर लव' पर, बन्धु रेडप्पाचार नें 'यू ऐण्ड डेथ' पर।

हुबली में रविवार के अतिरिक्त अन्य दिनों में बन्धु एम.आर. गोपाल, बन्धु एचसी

जगदीश, बन्धु के.एन. लक्ष्मीश और बन्धु जे.एम. धनंजय 'गायत्री' पुस्तक पर ऑन लाइन चर्चायें संचालित कर रहे हैं।

बैंगलोर सिटी लॉज में अप्रैल 2023 में जो कार्यक्रम हुये वे हैं – बहन वाणीवासुदेव नें प्रथम रविवार को 'अंतर्मुखी यात्रा की साधना' पर, बन्धु टी. श्रीनिवास नें दूसरे और तीसरे रविवार को ''त्याग'' और 'आत्मदर्शन' पर, डा0 एल. नागेश नें चौथे रविवार को 'द इनफाइनाइट यूनीवर्स – लास्ट लाइफ लोनली जर्नी' पर, बन्धु रेडप्पाचारी नें पांचवें रविवार को 'छान्दोग्योपनिषद' पर।

बहन ललिता नटराजन नें 16 अप्रैल को श्रीशंकराचार्य की 'भजगोविन्दम्' पर एक वक्तव्य दिया। बहन संध्यारानी नें 'श्री शंकराचार्य' पर वार्ता की। 7 मई को बच्चों के समरकैंप के साथ बुद्धपूर्णिमा के कार्यक्रम आयोजित किये गये। दि0 14 मई को श्वेत पद्माष्टमी मनाई गयी, जिसमें बहन नागवेणी भगवतार नें भगवद्गीता के श्लोकों का गायन किया। बहन ललिता नटराजन नें 'पांडित्य और अकल्टिज्म' पर भाषण दिया। बन्धु ए. वेंकटरेड्डी नें 'लाइट ऑफ एशिया' का पाठ किया। दि0 21 मई को बहन एन. शशिकला नें 'दिव्य योजना में प्रकृति के सौंदर्य का संदेश' विषय पर एक श्रव्यदृश्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

येदेयूरु में 5 मई को बहन ललिता नटराजन एक अध्ययन शिविर का निर्देशन किया। बन्धु जी.के. नटराजन नें इस अवसर पर 'रमण महर्षि' पर व्याख्यान दिया। निर्देशक नें 'प्राणायाम ध्यान और हृदय की पूर्णता' विषय पर एक वक्तव्य दिया। बन्धु गुरुनाथ बुधिहल ने इस अवसर पर 'वचन निर्वचन' विषय पर वार्ता की।

हिरयूर में दि0 5 मई को वैशाख पूर्णिमा और श्वेत कमल दिवस मनाया गया। बन्धु टी. टिप्पेस्वामी, बन्धु एल. आनन्द शेट्टी और बन्धु आर. रंगनाथ नें क्रमशः 'वैशाख पूर्णिमा' और 'श्वेत पद्माष्टमी' पर चर्चायें कीं।

बन्धु एन. रामकृष्ण रेड्डी नें गौरीबिदनूर में दि0 14 मई को एक दिन का कार्यक्रम निर्देशित किया। इसी अवसर पर वैशाख पूर्णिमा मनाई गयी जिसमें बन्धु सुब्बा रेड्डी नें 'बुद्ध और उनका जीवन' पर चर्चा की। बन्धु एम. रामकृष्ण ने महामंगल सूत्त पढ़ा और बन्धु के.एन. नागी रेड्डी नें 'सम्भल द्वीप' पर एक वार्ता की।

चित्रदुर्ग में 5 मई को बुद्धपूर्णिमा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बन्धु चन्द्रशेखर शास्त्री नें 'बुद्ध का जीवन' पर विचार व्यक्त किये। बहन एच.एन. भारती, बहन राजम्मा नें 'बुद्ध और उनकी उपलब्धियां' विषय पर वार्तायें कीं।

बन्धु के.ए. आदिकेशव प्रकाश नें 14 मई को एक दिन के सत्र का आयोजन किया। इसमें बहन ऊषा प्रकाश नें ''थिऑसफी क्या है?'' पर एक वार्ता की। निर्देशक नें ''थिऑसफी के मार्ग पर चलना'' पर व्याख्यान दिया।

एमपी एवम् राजस्थान

उदय पुर लॉज द्वारा दि0 16 जुलाई को आयोजित परिचर्चा का निर्देशन बन्धु अरविन्द नरवारे, अध्यक्ष उज्जैन लॉज एवम् राष्ट्रीय वक्ता भारतीय सेक्शन, मुख्य वक्ता थे। परिचर्चा का विषय था 'जीवन में थिऑसफी क्यों?' बन्धु नरवारे ने व्याख्या की कि थिऑसफी का असली अर्थ क्या है और इसका जीवन में क्या महत्व है। उनके वक्तव्य की विषयवस्तु बहुत सूचनापूर्ण और मूल्यवान थी।

उत्कल

दि0 1 अप्रैल को बहन मितालिनी नें एक ध्यान सत्र का संचालन किया। बन्धु रमेश प्रसाद मोहन्ती स्मारक अध्ययन सत्र दि0 2 से 4 मई तक बहन विभा सक्सेना नें 'ओं मणि पद्मे हुम और मनुष्य में अंतर्निहित शक्तियां' विषय पर संचालित किया। उत्कल फेडरेशन के सदस्यों नें 5 मई को बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर एक समारोह किया। बहन पौर्णमासी पटनायक नें मास्टर्स ऐण्ड द पाथ पुस्तक से वैशाख पर्व के बारे में कुछ अंश पढ़े।

दि0 8 मई को उत्कल फेडरेशन के हाल में श्वेत कमल दिवस मनाया गया। बहन मितालिनी ने इस दिन के महत्व के बारे में बताया।

भगवद्गीता, लाइट ऑफ एशिया और वॉइस ऑफ द साइलेंस के अंश क्रमशः बन्धु प्रमोद चन्द्र मिश्रा, बहन शैलबाला आचार्य और बन्धु सत्यब्रत रथ नें प्रस्तुत किया। डा0 रेवती नें 6 जून को 'ऐनी बेसैन्ट – द डाइमंड सोल' पर वक्तव्य दिया और बहन जयश्री कन्नन ने इस अवसर पर भक्तिगीत प्रस्तुत किये।

श्याम प्रसाद स्मारक अध्ययन सत्र और कार्यशाला का संचालन बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें 18 और 19 जून को 'एक थिऑसफिस्ट के रूप में आत्म निरीक्षण'

विषय पर संचालित किया।

बन्धु प्रदीप महापात्रा, राष्ट्रीय वक्ता नें जगन्नाथ लॉज, पुरी में 'आउटर कोर्ट' पुस्तक पर अध्ययन सत्र संचालित किया। उन्होंनें उज्जैन लॉज में 'महात्मा पत्रों' पर और बिहार फेडरेशन द्वारा आयोजित भोवाली अध्ययन शिविर में 'बेसिक थिऑसफी' पर व्याख्यान दिया। उन्होंनें बालेश्वर लॉज में 'थिऑसफी और थिऑसफिकल सोसाइटी का महत्व' विषय पर और उज्जैन लॉज में ''यूनिटी इन डाइवर्सिटी' विषय पर वार्ता की। इसके अतिरिक्त उन्होंनें अनेक ऑन लाइन अध्ययन सत्र और पब्लिक भाषण दिये।

बहन पौर्णमासी पटनायक, राष्ट्रीय वक्ता, नें 24 और 25 जुलाई को 'द थिऑसफिकल वे ऑफ लाइफ' पर अध्ययन सत्र संचालित किया।

बहन मितालिनी नें भोवाली कैम्प, बालेश्वर लॉज और उज्जैन लॉज में भारत समाज पूजा का संचालन किया। उज्जैन में उन्होंनें 'महात्मा पत्रों' पर और भोवाली में 'बेसिक थिऑसफी' पर भी प्रस्तुतियां कीं।

बरबटी लॉज, कटक में निम्नांकित पब्लिक व्याख्यान हुये –

बन्धु प्रदीप महापात्रा ने 'थिऑसफिकल सोसाइटी के उद्देश्य' पर, बन्धु ध्रुब पाण्डा नें 'कठोपनिषद' पर, बन्धु पूर्ण चन्द्र मिश्रा नें 'महा मुद्दगार आदि शंकर' पर, डा0 आदित्य मोहन्ती नें 'नैतिकता क्यों हों?' पर और बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें 'रियलाइजिंग द रिलेशनशिप' पर।

श्वेत कमल दिवस पर बन्धु पातंजलि और बन्धु भबानी नें इस दिन के महत्व के बारे में वार्तायें कीं।

भुबनेश्वर लॉज प्रत्येक रविवार को 'लाइट ऑन द पाथ' पर अध्ययन सत्र संचालित कर रहा है। इसके अतिरिक्त इसनें उद्धव गीता पर अध्ययन संचालित किया।

बहन विभा सक्सेना नें 'जीवन का उद्देश्य' विषय पर एक वक्तव्य दिया। डा0 रेवती नें 'यूनीवर्सल बन्धुत्व' पर वार्ता की और बहन जयश्री कन्नन नें कुछ मंत्र पढ़े और उनका अर्थ समझाया।

कटक लॉज के सदस्यों नें अडयार में हुये 'कार्यकर्ताओं के लिये प्रशिक्षण' कार्यक्रम में भाग लिया।

पारकिंसन जागरूकता कार्यक्रम संचालित किया गया और ऑक्यूप्रेसर थिरापी अभी भी बन्धु आशुतोश पाती और उनके दल के द्वारा की जा रही है। सप्ताह में एक दिन निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा की जा रही है।

श्री जगन्नाथ लॉज, पुरी में प्रत्येक मंगलवार को बन्धु प्रदीप के द्वारा 'वॉइस ऑफ द साइलेंस' पर अध्ययन सत्र संचालित हुये। लक्ष्मीनारायण लॉज में बन्धु प्रमोद मिश्रा नें 'हेरिटेज ऑफ इंडिया' पर चर्चा की। बहन पौर्णमासी पटनायक नें प्रत्येक बुधवार को 'डिवाइन प्लान' पुस्तक पर ऑन लाइन वार्तायें कीं। बन्धु सत्यब्रत रथ नें सनत कुमार लॉज में 'मास्टर्स ऐण्ड द पाथ' पुस्तक पर अध्ययन संचालित किये।

सिद्धार्थ लॉज में प्रत्येक रविवार को बहन मितालिनी नें 'द महात्मा लेटर्स' पर अध्ययन संचालित किये। प्रत्येक रविवार को बहन मितालिनी और बन्धु प्रदीप महापात्रा प्रातः 6.30 बजे भारत समाज पूजा संपन्न करते हैं। बहन मितालिनी नें 'महात्मा ने पत्र क्यों लिखे और किस प्रकार वे वर्तमान समय में प्रासंगिक हैं' विषय पर एक वक्तव्य दिया।

उ0प्र0 एवम् उत्तराखण्ड

धर्म लॉज लखनऊ में दि0 5 और 12 जुलाई को बन्धु बी.के. पाण्डेय नें दो सत्रों में 'फ्रीडम फ्राम नोन' पुस्तक पर वार्तायें कीं। दि0 19 और 26 को बन्धु प्रमिल द्विवेदी नें 'ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' के आधार पर क्रमशः 'सदाचार' और 'प्रेम' विषयों पर चर्चायें कीं।

निर्वाण लॉज आगरा में दि0 6 और 13 जुलाई को क्रमशः 'आध्यात्मिक खोज' और 'धर्म और आध्यात्मिकता' विषयों पर परिचर्चायें सम्पन्न कीं। दि0 20 और 27 जुलाई को डा0 एच.वी. उपाध्याय और डा0 विनोद शर्मा नें क्रमशः 'मैत्रेय – उद्धव संवाद' और 'लौकिक और अलौकिक' विषयों पर चर्चायें कीं।

सर्व हितकारी लॉज गोरखपुर में प्रो0 वी. द्विवेदी और बन्धु अरविन्द राय नें दि0 5 जुलाई को 'अद्वैत ब्रह्म' विषय को संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया। दि0 12, 19 और

26 जुलाई को प्रो0 अरविन्द राय, प्रो0 वी. द्विवेदी और प्रो0 राम अचल नें क्रमशः 'विचार शक्ति', 'माया' और 'राष्ट्रीय जीवन की दिशा' पर वक्तव्य दिये। दि0 12 जुलाई को एक ध्यान सत्र भी आयोजित किया गया।

प्रयास लॉज गाजियाबाद में बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें दि0 2 और 9 जुलाई को ऐनी बेसैन्ट की पुस्तक 'द मास्टर्स', दि0 16 जुलाई को 'योगा ऑफ लाइट' और दि0 30 जुलाई को 'अदृश्य सहायक' विषयों पर अध्ययन संचालित किये।

नोयडा लॉज नोयडा में दि0 2 और 16 जुलाई को बहन आशा नें पुस्तक 'निर्वाण' के अध्याय 4 और 5 का अध्ययन संचालित किया।

चोहान लॉज कानपुर में बन्धु शिवबरन सिंह नें दि0 2 और 23 जुलाई को 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' विषय को दो खण्डों में प्रस्तुत किया। बन्धु एस.एस. गौतम नें दि0 9, 16 और 30 जुलाई को क्रमशः 'माइंड इज द स्लेयर ऑफ द रियल, खण्ड 2', 'धर्मों का बन्धुत्व', और 'अंधविश्वास' विषयों पर वार्तायें कीं।

आनन्द लॉज, प्रयागराज में दि0 9, 23 और 30 जुलाई को बहन सुषमा श्रीवास्तव, बहन अर्चना पांडेय और बन्धु के.के. जायसवाल नें क्रमशः 'बुद्ध धर्म और दर्शन', 'दैनिक जीवन में प्रेम' और 'आध्यात्मिक जीवन पर वार्तायें कीं। दि0 16 जुलाई को लॉज की एक्जीक्यूटिव कमेटी की बैठक हुयी।

काशी तत्व सभा, वाराणसी के आयोजन में गुणवत्ता युक्त कार्यक्रम के अंतर्गत बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें दि0 4, 11, 12 और 13 जुलाई को क्रमशः 'विचार शक्ति – हम अपना भाग्य स्वयं बनाते हैं', 'मैं कौन हूं', 'मेडीटेशन या मेडिकेशन' और 'होलिस्टिक हेल्थ' पर ऑन लाइन व्याख्यान दिये।

ऐनी बेसैन्ट लॉज, वाराणसी नें दि0 26 जुलाई को महिला महाविद्यालय बीएचयू की छात्राओं के लिये एक निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया। निबन्ध का विषय था, 'मानव जीवन का मूल्य'। 20 छात्राओं ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

ब्रह्मविद्या लॉज जिगना जनपद गोरखपुर में 17 जुलाई को बन्धु अच्युत शेषनाथ त्रिपाठी नें 'भगवद्गीता में भक्तियोग' विषय पर एक वक्तव्य दिया।

मैत्रेय लॉज, ग्रेटर नोयडा में दि0 3 और 4 जुलाई को बन्धु डी.के. सत्संगी नें

भगवद्गीता के अध्याय 3 और 4 का अध्ययन संचालित किया।

प्रज्ञा लॉज लखनऊ में बहन वासुमती अग्निहोत्री नें दि0 9, 16 और 23 जुलाई को 'ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' पर अध्ययन संचालित किया। दि0 30 जुलाई को लॉज द्वारा आयोजित स्वामी आनन्द स्मृति भाषण बन्धु एस.के. पाण्डेय, सचिव उ0प्र0 फेडरेशन ऑफ टीएस एवम् राष्ट्रीय वक्ता टीएस भारतीय सेक्शन नें प्रस्तुत किया। उनके भाषण का विषय था, ''दैनिक जीवन में ध्यान का महत्व''।

विद्यार्थियों / बच्चों के लिये कार्यक्रम

डा0 अजय राय नें दि0 5 जुलाई को नीना थापा इंटर कॉलेज गोरखपुर के छात्रों के समक्ष 'महात्मा गांधी की शिक्षायें' विषय पर वक्तव्य दिया।

बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें दि0 22 जुलाई को पर्ल पैराडाइस गोरखपुर के छात्रों के समक्ष 'बच्चों के लिये सदाचार' विषय पर एक वार्ता की।

भारतीय सेक्शन के कार्य / कार्यक्रम में योगदान

बन्धु एस.एस. गौतम ने 'इंडियन थिऑसफिस्ट' पत्रिका के अगस्त 2023 अंक का हिन्दी में अनुवाद किया।

बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें भारतीय सेक्शन के 14 जुलाई के ऑन लाइन सत्र का समायोजन किया।

बहन प्रांशी मेहरोत्रा नें सेक्शन के त्रैमासिक ई–न्यूजलेटर के अप्रैल–जून अंक 2023 के अंक को डिजाइन और उसका संपादन किया।

राष्ट्रीय वक्ताओं के योगदान

बन्धु एस.एस.गौतम नें शंकर लॉज दिल्ली, के आमंत्रण पर दि0 15 जुलाई को 'दिव्य प्रकाश' विषय पर प्रस्तुति की।

बहन विभा सक्सेना नें दि0 14, 21 और 28 जुलाई को महात्मा पत्र संख्या 83 से 87 को तीन खण्डों में प्रस्तुत किया।

शिखर अग्निहोत्री नें दि0 9 जुलाई को अडयार चेन्नै में हुयी टीओएस इण्डिया अधिवेशन में 'ऐनी बेसैन्ट – महान रहस्यविद्' विषय पर एक वक्तव्य प्रस्तुत

किया। उन्होंनें 22 जुलाई को पिरामिड मेडीटेशन सेंटर, गुजरात के आयोजन में आई.के. तैमिनी की पुस्तक 'सेल्फ कल्चर' के अध्याय 17 पर ऑन लाइन अध्ययन संचालित किया। दि0 23 जुलाई को उन्होंनें यंग इण्डिया थिऑसफिस्ट ग्रुप के आयोजन में 'लाइट ऑन द पाथ' के नियम 2 और 3 पर ऑन लाइन व्याख्यान दिया।

बहन विभा सक्सेना नें दि0 15 जुलाई को थिऑसफिकल सोसाइटी के रसियन सेक्शन के आयोजन में 'द पाथ ऑफ सेल्फ नॉलेज' विषय पर एक ऑन लाइन वक्तव्य दिया।

बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें 16 जुलाई को इंटर अमेरिकन थिऑसफिकल फेडरेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'रियलाइजिंग द रिलेशनशिप' विषय पर एक ऑन लाइन वक्तव्य दिया।

————————————————

यंग थिआसफिस्ट्स – नार्डेन 2023

पुनः सक्रिय हुआ वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ यंग थिऑसफिस्ट्स (डब्ल्यू.एफ.वाई.टी.) एक अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित कर रहा है जो 27–30 दिसम्बर 2023 की अवधि में टीएस मुख्यालय अडयार (इंडिया) में संपन्न होगा। यह एक ऐसा अवसर होगा जब विभिन्न देशों और महाद्वीपों से आने वाले समान सोच के साथी युवा भाई और बहनें, जिनको थिऑसफी का सार प्रिय है और उसे गले लगा कर दैनिक जीवन में प्रयोग करना चाहते हैं। हम ऐनी बेसैन्ट की अध्यक्षता में स्थापित इस युवा थिऑसफिस्ट आन्दोलन की 100 वीं वर्षगांठ भी मना रहे होंगे।

इन दिनों में हम थिऑसफिस्ट होने का गहनतम अर्थ और सबसे अधिक महत्वपूर्ण पक्ष इसके व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य की पहचान करनें के प्रश्न पर फोकस करेंगे। एचपीबी नें साइंस ऑफ प्रैक्टिकल अकल्टिज्म और इस प्रकार के अध्ययन में आने वाली कठिनाइयों के बारे में कुछ अंतर्दृष्टि दी है। हम इस

मूल्यवान समय को अपनी आध्यात्मिक प्रकृति को विकसित करने के लिये पूछताछ, विवेचन और दृष्टिकोणों के आदान प्रदान में प्रयोग करेंगे। अन्य गतिविधियां जो सम्मिलित होंगी उनमें ध्यान, आपसी सहयोग से कार्यशालायें, युवा वार्तायें, पाठ और साथ होने का आनन्द होंगी।

प्रत्येक अगला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन अधिकाधिक मित्रतायें बनाता है और अपेक्षाकृत अधिक विस्त्रित आध्यात्मिक परिवार विकसित करता है जिससे गहनतर वैश्विक एकत्व का भाव जागृत होता है। सम्मिलित होने के लिये आपका स्वागत है। अधिक सूचनाओं के लिये कृपया संपर्क करें – ts.youth.gathering@gmail.com

सारा ओर्टेगा वान व्लोटेन
बोर्ड ऑफ द डब्ल्यू एफ वाई टी
कम्यूनिटी ऑफीसर

अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन की सूचना

मुख्य विचार बिन्दुः– वैश्विक मेधा (यूनीवर्सल इंटलीजेंस) खोज और उसकी समझ

थिऑसफिकल सोसाइटी का 148 वां अतर्राष्ट्रीय अधिवेशन अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, अडयार, चेन्नै में 31 दिसम्बर 2023 से 4 जनवरी 2024 तक (प्रस्थान 5 जनवरी) की अवधि में होगा। सोसाइटी के सभी सदस्य जो गुड स्टैंडिंग में हैं उनका डेलीगेट के रूप में भाग लेने के लिये स्वागत है। जो सदस्य नहीं हैं वे ठहरने की व्यवस्था पाने के पात्र नहीं हैं, किन्तु वे अधिवेशन में भाग लेने और कैन्टीन में भोजन व्यवस्था के लिये पंजीकृत करवा सकते हैं। कार्यक्रम में ऑन लाइन भाग लेने के लिये भी पंजीकरण आवश्यक है।

केवल सदस्यों के लिये ठहरने की व्यवस्था

पश्चिमी स्टाइल लेडबीटर्स चैम्बर्स (एलबीसी):– एलबीसी के प्रत्येक कमरे में दो बेड और संलग्न बाथरूम हैं। कुछ कमरे इतने बड़े हैं कि उनमें तीन बेड्स की व्यवस्था भी की जा सकती है।

भारतीय स्टाइलः– भारतीय स्टाइल के कमरों को अपग्रेड किया गया है, किन्तु

कमरों की संख्या सीमित है। इसलिये पंजीकरण शीघ्र करवा लें।

वितरणः– ठहरने की व्यवस्थाओं के बारे में निर्णय दिसम्बर 2023 की अवधि में एकॉमडेशन कमेटी द्वारा किया जायेगा और परिणाम ईमेल के माध्यम से भेज दिया जायेगा।

पैकेजेज़ः– रेट प्रति व्यक्ति के आधार पर 30 दिसम्बर 2023 से 5 जनवरी 2024 लंच तक के लिये हैं। एलबीसी का अर्थ है लेडबीटर्स चैम्बर्स।

विदेशी प्रतिभागियों के लिये

ए. एलबीसी मेंः यू एस डॉलर 400/– जिसमें पंजीकरण शुल्क, एलबीसी में ठहरने की व्यवस्था और एलबीसी की कैंटीन में भोजन व्यवस्था सम्मिलित है।

बी. भारतीय स्टाइल : यू एस डॉलर 150/– जिसमें पंजीकरण शुल्क, भारतीय स्टाइल में ठहरने की व्यवस्था और भारतीय कैन्टीन में भोजन व्यवस्था सम्मिलित है।

सी. केवल कार्यक्रमों में सहभागिताः– बिना भोजन और ठहरने की व्यवस्था के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये यू एस डॉलर 70/–.

डी. केवल कार्यक्रम में ऑन लाइन सहभागिताः– यू एस डॉलर 10/–,

भारतीय प्रतिभागियों के लिये

ई. पश्चिमी स्टाइल एलबीसी मेंः रु. 13,500/– जिसमें पंजीकरण शुल्क, एलबीसी में ठहरने की व्यवस्था और एलबीसी में भोजन व्यवस्था सम्मिलित है।

एफ. भारतीय स्टाइल कमरों मेंः रु. 5,000/– जिसमें पंजीकरण शुल्क, भारतीय स्टाइल में ठहरने की व्यवस्था और भारतीय कैन्टीन में भोजन व्यवस्था सम्मिलित है।

जी. पंजीकरण और भारतीय कैंटीन में भोजन व्यवस्था रु. 3,500/–.

एच. पंजीकरण और भारतीय स्टाइल की ठहरने की व्यवस्था बिना भोजन व्यवस्था के रु. 2,000/–.

आई. कार्यक्रम में भाग लेने के लिये बिना ठहरने और भोजन व्यवस्था के, पंजीकरण शुल्क रु. 500/–.

जे. कार्यक्रम में ऑन लाइन भाग लेने के लिये, पंजीकरण शुल्क रु. 100/–.

भुगतान

विदेशी डेलीगेट्स : पंजीकरण और भुगतान ऑन लाइन करें। यदि किसी कारणवश आप ऑन लाइन भुगतान करने में असमर्थ हैं, तो आपके यहां पहुंचनें पर भुगतान प्राप्त कर लिया जायेगा। तब संबंधित पैकेज दर से (आपके पासपोर्ट की प्रति के साथ) मास्टर कार्ड, वीसा क्रेडिट कार्ड, या विदेशी करेंसी में कैश भुगतान ले लिया जायेगा। कृपया अडयार पहुंचनें के पहले अपना यात्रा बीमा करवाना न भूलें।

भारतीय डेलीगेट : पंजीकरण ऑन लाइन करें और भारतीय रुपये में या तो (क) रजिस्ट्रेशन के साथ ही या (ख) द थिऑसफिकल सोसाइटी के नाम चेक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा कन्वेंशन ऑफीसर, थिऑसफिकल सोसाइटी, अडयार, चेन्नै, 600020 इंडिया को कोरियर करें। (टेलीफोन 91 44 24917198)। यह महत्वपूर्ण है कि भुगतान की प्रक्रिया पूरी होने के बाद उसके बारे में कन्वेन्शन आफीसर को ई मेल द्वारा इस नम्बर पर सूचित करें <convention@ts-adyar.org> मेल में संकेत करें – (1) डेलीगेट का नाम (2) बैंक का नाम (3) भेजने की तिथि और ट्रान्सफर रेफरेंस आईडी।

पंजीकरण फॉर्म

ठहरने की व्यवस्था के साथ पंजीकरण की अंतिम तिथि 26 नवम्बर 2023 है।

ऑन लाइन पंजीकरण भुगतान के लिये निर्देश के साथ कन्वेंशन की वेब साइट <https://covention.ts-adyar.org/> 1 सितम्बर से खुलेगी। यदि ठहरने की व्यवस्था भर जाती है तो वेब साइट पर स्थिति सूचित की जायेगी।

जिन डेलीगेटों के ठहरने की व्यवस्था हो गयी है या नहीं हो पायी है, उन्हें 20 दिसम्बर के पहले ईमेल द्वारा सूचित कर दिया जायेगा।

जिन डेलीगेट्स नें भुगतान कर दिया है किन्तु उन्हें ठहरने की व्यवस्था नहीं मिल पायी है उनका शुल्क कन्वेंशन के बाद रिफण्ड कर दिया जायेगा।

निरस्तीकरण 10 दिसम्बर 2023 तक

निरस्तीकरण 10 दिसम्बर 2023 तक

जो डेलीगेट अपना पंजीकरण और ठहरने की व्यवस्था के लिये प्रार्थना कर रखी है, उनके लिये निरस्तीकरण की अंतिम तिथि 10 दिसम्बर 2023 होगी। इस तिथि के बाद कैंसिल करवाने वालों को कोई शुल्क वापस नहीं किया जायेगा। यदि निरस्तीकरण प्रार्थना पत्र 10 दिसम्बर 2023 के पहले प्राप्त होते हैं तो पैकेज धन से पंजीकरण शुल्क घटा कर बाकी राशि कन्वेन्शन के बाद वापस कर दिया जायेगा।

कन्वेन्शन ऑफीसर

शिखर अग्निहोत्री, ईमेल : <convention@ts-adyar.org>

पोस्टः कन्वेन्शन आफीसर, द थिआसफिकल सोसाइटी, अडयार, चेन्नै, 600020

कन्वेन्शन वेब साइट : <https://covention.ts-adyar.org/>